This question paper contains 3 printed pages. **Your Roll No. ....**

Sl. No. of Ques. Paper	**: 5173**	**G**
Unique Paper Code	**: 205155**	
Name of Paper	**: Katha Evam Sansmaran Sahitya**	
Name of Course	**: B.A. (Prog.) Hindi Discipline**	
Semester	**: I**	
Duration	**: 3 hours**	
Maximum Marks	**: 75**	

(इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिये गये निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिये।)

सभी *प्रश्न अनिवार्य हैं।*

1. प्रेमचंदयुगीन हिन्दी उपन्यास की विकास-यात्रा पर प्रकाश डालिए।

अथवा

नई कहानी की प्रमुख प्रवृत्तियों का परिचय दीजिए। 9

2. हिन्दी संस्मरण साहित्य के विकास की रूपरेखा प्रस्तुत कीजिए।

अथवा

"महादेवी वर्मा के संस्मरणों में नारी के दयनीय जीवन का मार्मिक चित्रण हुआ है।" स्पष्ट कीजिए। 9

3. किसी **एक** गद्यांश की सप्रसंग व्याख्या कीजिए: 9

(क) बिहारी को घर पर चैन नहीं पड़ा। भीतर जो कट्टो का कल्पना के सहारे बनाया हुआ एक चित्र बैठ गया है, दिल को गुदगुदाता रहता है। इसलिए पिता को वह पत्र लिखने के लिए उकसाया और इस तरह गांव आने का बहाना प्राप्त किया। बाबू जी भी अब सचमुच बहुत बाट देखते बैठना नहीं चाहते। वह सत्य को खो देने को तैयार हैं, पर इस वर्ष से आगे गरिमा का ब्याह टालने को तैयार नहीं।

अथवा

पैदा करो, और फिर खपाओ। जहाँ श्रम केन्द्रित हो गया, वहाँ श्रम का मूल्य और श्रम की असलियत घट गई, और पैदायश बढ़ाने की फिक्र हो गई। उसके लिए फिर बलात् खपत बढ़ाने की तरकीबें सोचनी पड़ती हैं। यह अपनी-अपनी खातिर पैदायश और खपत बढ़ाने की प्रवृत्ति मेरे ख्याल में बड़ी गड़बड़ है। मेरे ख्याल में यह पैसा ही गड़बड़ है। पैसे ने श्रम का सम्मान नष्ट कर दिया और उसे किराये की चीज बना दिया। (परख से)

(ख) "यहाँ, रजबाँध के किनारे इस मैदान में गढ़ा खोदकर पहले ही से तैयार था। खाँचा-समेत मेरी जड़ों का थाल उसमें डाल दिया गया। पूरी ताकत लगाकर राउत ने अपनी बांहों में मुझे उठा लिया, तब गढ़े में डाला था। औरों ने भी हाथ लगा रखे थे। हरे-हरे दो बांस काट लाये गये थे। एक-एक बांस को चीर-फाड़कर आठ-आठ लम्बी लचकीली पट्टियाँ निकाल ली गईं। उन्हीं पट्टियों से टट्टर बुना गया था। गोल टट्टर, बाहर से हरा और अंदर से सफेद। ऐसी हवादार और नफीस बाड़ के अंदर रहने का सौभाग्य कभी प्राप्त होगा, अपने राम ने सपने में भी इस सुन्दर सुरक्षा का ख्याल नहीं किया।

P.T.O.

अथवा

जैकिसुन को अपना बाप अच्छी तरह याद था। आठ वर्ष पहले उसका देहान्त हुआ, तब जैकिसुन की आयु पंद्रह साल की थी। पिता के बारे में उसने मां से बहुतेरी बातें सुनी थीं। लेकिन बाबा के मुंह से अपने बाप की प्रशंसा सुनकर जैकिसुन गद्‌गद हो उठा। '30-32' के आंदोलन में जानू राउत दो महीने जेल भी रह आया था। नमक-कानून तोड़ने के दिनों में बस्ती रूपउली के तीन आदमी गिरफ्तार हुए थे— जानू राउत, दयानाथ राय और वीरभद्र झा— जैकिसुन उन दिनों ढाई-तीन साल का अबोध बालक रहा होगा। उसने सविनय-कानून-भंग-आंदोलन के बारे में काफी सुन रखा था। अब सही ब्यौरा वह बरगद बाबा से मालूम करना चाहता था। पुरानी बातें कुछ-न-कुछ सुन ही ली थीं। आगे जैकिसुन को राष्ट्रीय मुक्ति-संग्राम की कहानी सुननी थी। (बाबा बटेसरनाथ से)

(ग) माथे पर स्नेह से हाथ फेरते हुए कहा, "आरम्भ में बहुतों को ऐसे अनुभव होते हैं बेटी! मुझे भी हुआ था। मन को पानी के समान बनाओ बेटी! आंच पर चढ़े तो गरम हो जाये और उतरने पर फिर ठण्डा। मन को आंच से उतारने की कला भी सीखो।" माधवी के चेहरे पर चढ़ती अनख देख पैंतरा बदला, करुण स्वर में बोली "हम क्या करें बेटी! हम तो नगरवधू हैं। हमारा पतिव्रत-धर्म धन से बंधा है। पुरुष उसका माध्यम है और प्रेम व्यवसाय।"

अथवा

सूर्य के प्रकाश को किसी के लिए दिन और किसी के लिए रात क्योंकर बतलाया जा सकता है? जीवन में बहुत बड़ी ठोकर खाकर भी चेलम्मा अपनी नई जवानी के काल से उठते हुए इस महाहलचल-भरे प्रश्न का उत्तर अब तक अपने अंदर न ढूंढ पाई थी, फिर भी उस उत्तर की खोज में जो अपार कष्ट उसने सहे थे वे उसे कहीं पर बुरी तरह थका चुके थे। जो दुख उसने भोगा वह माधवी न भोगे, नई पीढ़ी न भोगे, यह वह अवश्य चाहती थी। (सुहाग के नूपुर से)

4. किसी **एक** प्रश्न का उत्तर दीजिए:

(i) 'परख' उपन्यास की मूल संवेदना पर विचार कीजिए।

अथवा

बिहारी की चरित्रगत विशेषताएं बताइए।

(iii) 'सुहाग के नूपुर' की मूल समस्या पर प्रकाश डालिए।

अथवा

'सुहाग के नूपुर' के आधार पर कन्नगी की चारित्रिक विशेषताओं का आकलन कीजिए।

(v) उपन्यास कला की दृष्टि से 'बाबा बटेसरनाथ' की समीक्षा कीजिए।

अथवा

'बाबा बटेसरनाथ' के प्रतिपाद्य पर विचार कीजिए। 15

5. *सप्रसंग व्याख्या कीजिए:*

'मेरे मन में उस समय तरह-तरह के सिद्धांत आये। मैंने स्थिर किया कि अपराध के प्रति करुणा ही होनी चाहिए। रोष का अधिकार नहीं है। प्रेम से ही अपराध-वृत्ति को जीता जा सकता है। आतंक से उसे दबाना ठीक नहीं है। बालक का स्वभाव कोमल होता है और सदा ही उससे स्नेह से व्यवहार करना चाहिए इत्यादि।

अथवा

दारिद्र्य की ठोकरों ने उसे व्यथित और अधीर कर दिया है। मगध की प्रासाद-माला के वैभव का काल्पनिक चित्र— उन सूखे डण्ठलों के रंधों से, नभ में— बिजली के आलोक में— नाचता हुआ दिखाई देने लगा। खिलवाड़ी शिशु जैसे श्रावण की संध्या में जुगनू को पकड़ने के लिए हाथ लपकता है, वैसे ही मधुलिका मन-ही-मन कह रही थी, "अभी वह निकल गया।" 8

6. 'नमक के दारोगा' कहानी की मूल संवेदना पर विचार कीजिए।

अथवा

'हंसा जाई अकेला' की कहानी कला पर विचार कीजिए। 10

7. 'नाट्य सम्राट पृथ्वीराज कपूर' में वर्णित पृथ्वीराज कपूर के अभिनय कौशल पर विचार कीजिए।

अथवा

'निराला की साहित्य की साधना' के आधार पर निराला की चारित्रिक विशेषताएँ बताइए। 15